647510 **BRS3HINF0312** **Seat No :_____**

B.R.S. Semester - 3 (*CBCS*) Examination
Oct/Nov. -2018
HINDI(FOUNDATION - 5)

Time: 2:30 Hours **Marks: 70**

Instructions:

1. All questions are compulsory.
2. Figures to the right indicate marks.

प्रश्न-१ 'पर्दे के पीछे' एंकाकी के आधार पर रोड छीतरमल का चरित्र-चित्रण कीजिए। (१५)

अथवा

प्रश्न-१ 'स्टाइल' एकांकी का कथानक लिखते उनमे व्यक्त समस्याओ पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न-२ एकांकी कला के तत्वों के आधार पर पर्दे के पीछे एंकाकी की समीक्षा कीजिए। (१५)

अथवा

प्रश्न-२ 'रीठ की हड्डी' का कथानक अपने शब्दो में लिखिए।

प्रश्न-३ निम्नांकित में से किन्ही तीन की संदर्भमे व्याख्या कीजिए। (१५)

(1) "यह प्रेम का ताप है जितना ही बढता है, सौन्दर्य उतना ही निखरता है, कविता उतनी ही प्रखर होती है, उन्माद उतना ही मादक होता है।"
(2) "अनुशासन की मर्यादा पर बडे से बडे व्यक्ति का बलिदान किया जा सकता है।"
(3) "उमा: अब मुझे कह लेने दीजिए। बाबूजी! ये जो महाशय मेरे खरीददार बनकर आये हैं, इनसे जरा पूछिये कि कया लडकियाँ के दिल नहीं होते ? कया उन्हे चार नहीं लगती? कया बे भेड-बकरियाँ है जिन्हे कसाई अच्छी तरह देख-मोलकर खरीदते है?"
(4) "आप मेरे घर आना चाहती हो तो, शारदा को पूछना पडेगा – घर से मतलब है शारदा – मैं कुछ नही हूं शीलाजी, जो कुछ है शारदा ही है।"
(5) "ये हे कोंग्रेस के लोग जो मेरे समान ही स्वार्थी और अर्थ लोलूप है। इनके भी वैसे ही मकान, कोठी, मोहर, नौकर चाकर है फिर यह मजा कि काम कुछ भी नहीं करते, व्यापार कोई नहीं करते तो क्या रुपया आकाश से लूट पडता है?"

प्रश्न-४ 'शारदा; का चरित्र-चित्रण कीजिए। (१५)

अथवा

प्रश्न-४ 'रीठ की हड्डी' की नायिका 'उमा' का चरित्र – चित्रण कीजिए।

प्रश्न-५ निम्नाकिंत प्रश्नो के उत्तर सूचनानुसार कीजिए। (१०)

किताबे मंगवाने के लिए जयभारती प्रकाशन इलाहाबाद को पत्र लिखिए।

अथवा

प्रश्न-५ निम्नाकिंत परिच्छेद का सार लेखन कीजिए।

"भारत की स्वतंत्रता के पश्चात देश में भावात्मक एकता बनाये रखने के लिए एक राष्ट्रीभाषा होना अति आवश्यक था। किन्तु भारत जैसे विशाल देश में जहाँ अनेक प्रांत और भाषाएँथी वहाँ एक भाषा के समबन्ध में विवाद होना स्वाभाविक था। अंत: वर्षा के वाद-विवाद के बाद हिन्दी को राष्ट्रभाषा के उच्च पद पर बिठाया गया और यह निर्णय तर्ज संगत रहा।

वास्तव में राष्ट्रभाषा वह है जिसे राष्ट्र की अधिकतर जनता समझ सके और जो बिना किसी कठिनाई के केन्द्रीय एवं प्रान्तीय प्रशासने:, सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थानाँ में प्रमुख रूप से व्यवहार में लाई जा सके। यह स्थान उसी भाषाको मिल सकता है जो अन्त:प्रान्तीय हो और व्यापार तथा सार्वजनिक व्यवहार में स्वेच्छा से उपयोग में लाईं जाती है। उसमें इतनी क्षमता हे कि वह अपने देश की संस्कृति को कायम रख सके। समग्र राष्ट्र को धार्मिक, सांस्कृतिक एवं भावात्मक एकता में बांध सके। सौभाग्य से हिन्दी में ये सभी गुण विद्यमान है।"

****